eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, July-Dec 2018

बौद्ध काल में नारी का उत्थान एवं अवनति–एक साहित्यिक अध्ययन

[1]डा0 कान्ती शर्मा

[1]एसोसिएट प्रोफेसर (संस्कृत विभाग), राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सिरसागंज, फिरोजाबाद।

Received: 15 June 2018, Accepted: 15 July 2018, Published on line: 15 Sep 2018

Abstract

प्रस्तुत लेख बौद्ध काल से पूर्व एवं बौद्ध काल तथा बौद्ध काल के अन्तिम चरण में नारियों की उन्नति एवं अवनति को स्पष्ट करता है । लेख में स्पष्ट किया गया है कि महिलाओं को जो गौरव वैदिक काल में प्राप्त था वह उत्तर वैदिक काल में नहीं रहा महिलाओं को हीन समझा जाने लगा और उपभोग की वस्तु समझा जाने लगा। किन्तु बौद्ध काल महिलाओं के लिए वरदान साबित हुआ और महिलाओं ने उन्मुक्त वातावरण स्वाबलम्वन की ओर कदम रखा। महिलाओं की शिक्षा एवं महिलाओं को संघ में प्रवेश देकर, तथा महिलाओं को पुरूष के समान अधिकार देकर पूर्व से चले आ रहे वर्णगत वैषम्य को समाप्त हुआ। महिलाओं ने खुद को सांस्कृतिक परिवेश में लाकर साबित कर दिया कि महिलाएं भी पुरूषों के समान है। किन्तु कालान्तर में संघ में प्रवेश के बाद बौद्धिक धर्म की नैतिक चरित्र की पवित्रता नष्ट हो गयी और महिलाएं पुनः उपभोग की वस्तु बन गयी। प्रस्तुत लेख में यथा विश्लेषण किया गया है तथा समसामयिक विद्वानों के वक्तव्यों को समावेशित किया गया है।

महत्वपूर्ण शब्दाबली :– कंटकीर्ण, चक्रीय परिवर्तन, वैषम्य, समत्व, कुण्डकेशा, विशाखा, आम्बापाली, बहुविवाह, थेरी गाथा, सुत्त पिटक, जातक कथाएं, आम्रकुंज, अजंता, ऐलोरा, भिक्षु, भिक्षुणी ।

प्रस्तावना :–प्रस्तुत लेख बौद्ध काल में महिलाओं की उन्नति एवं समन्नुत दशा के स्पष्टीकरण से सम्बन्धित है। लेख में पूर्व वैदिक तथा वैदिक तथा उत्तर वैदिक काल एवं उत्तर वैदिक काल में महिलाओं की हीनता को प्रकट करता है। किन्तु बौद्ध काल नारियों की उन्नति एवं पुरूषो के समान उत्तराधिकार शिक्षा एवं संस्कृति को परिलक्षित करता है। लेख में नारियों की विवाह की आयु तथा विच्छेद को भी सामयिक आधार पर स्पष्ट किया गया है। अविवाहिता नारी, विवाहिता नारी वैधव्य को सहन कर रही नारियों की उन्नति का बौद्ध काल में विश्लेषण किया गया है। लेख में नारी को भोग्या की दहलीज से निकाल कर पुनः सम्मान के दायरे में प्रतिष्ठित करना तथा बौद्ध संघों में प्रवेश के

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, July-Dec 2018

बाद पुनः नारी को भोग्या के रूप में परिवर्तित होना परिवर्तन के चक्रीय सिद्धान्त को प्रकट करता है। लेख में तालिका साहित्य का यथा विवेचन किया गया है।

नारियों के प्रति पूर्व वैचारिक पृष्ठभूमि :– महाभारत काल में नारी चरित्र की महानता और उसका सांस्कृतिक महत्व स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। यहॉ सत–पथ–गामिनी एवं पुत्र को कुमार्ग से बचाने वाली माता है, आपत्तिकाल में संग–परित्याग न करने वाली पत्नी है, गृह की लज्जा रचने वाली गृहिणी है, पति के साथ यमलोक को गमनोद्यत पतिव्रत है तथा अपने सत् के तेज से वासना के कल्मष को भस्म कर देने वाली सती है। अवश्य ही हमें नारी रामायण जैसे उच्च नैतिक आदर्शों का निर्वाह नहीं दिखायी देता। फिर भी अपनी विविधता में ये नारियॉ भारतीयता की सजीव प्रतिमॉएं हैं। '' नित्यं निवसते लक्ष्मी कान्यकासु प्रतिष्ठता''।[1] महाभारत में पुत्री को लक्ष्मी का वास मानते हुए भी परिवार में पुत्र को ही अपेक्षाकृत अधिक महत्व प्राप्त होता था। '' आत्मा पूत्रः सखी भार्या कृच्छृ तु दुहिता नृणाम''।[2] अर्थात् पुत्र परिवार की आशाओं की सफलता का प्रतीक था और पुत्री उसकी चिन्ताओं का संवर्धन करने वाली है। किन्तु रामायण काल में नारियों की स्थिति महाभारत काल की अपेक्षा अधिक सम्मानित था फिर पुत्र को प्राथमिकता प्रदान की जाती थी।

रामायण तथा महाभारत काल में सुशिक्षित समुन्नत नारियों की एक श्रेणी दिखायी देती है किन्तु दूसरी तरफ सार्वजनिक शिक्षा का अभाव था। किन्तु फिर भी महिलाओं की स्थिति सम्मानजनक थी उत्तर वैदिक काल तक आते आते महिलाओं की स्थिति दयनीय हो गयी और लगभग आधी आबादी हीनता की चपेट आ गयी। किन्तु बौद्ध काल में महिला इस हीनता से निकलकर पुनः प्रतिष्ठित हुई।

बौद्धकाल और नारी उत्थानः– परिवर्तन विश्व का अवश्याम्भावी सिद्धान्त है। मनुष्य का कभी उन्नति के शिखर पर आरूड़ होना तो कभी अवनति के कंटकाकीर्णी गर्त में गिरना ही चक्रीय परिवर्तन सिद्धान्त है। नारी जीवन भी परिवर्तन के चक्र से सुरक्षित न रह सका। वैदिक युग में प्राप्त सम्मान और आदर उत्तर वैदिक काल में न्यूनता की श्रेणी में पहुॅच गया। नारी की स्वाधीनता अब पुरूष के कन्धों पर भार स्वरूप प्रतारण और अपमान सहने के लिए बाध्य हो गयी। परन्तु यह स्थिति स्थायी नहीं थी। बुद्ध की अमर वाणी ने वर्णगत वैषम्य को दूर कर समत्व भावना का प्रसार किया । और उपासना के बाहय आडम्बर का परित्याग कर आन्तरिक उद्बोधन का उपदेश दिया। जिसका प्रभाव तत्कालीन धार्मिक, सामाजिक एवं राजनैतिक क्षेत्रों पर व्यापक रूप से परिलक्षित हुआ। नारी को

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, July-Dec 2018

उन्मुक्त वातावरण में जीवन और जगत की समस्याओं का समाधान करने का अवसर मिला। नारी की इस परिवर्तन दशा के दर्शन हमें बौद्ध दर्शन में होते हैं।

वेडेन ने अपनी पुस्तक ''वीमेन इन बुद्धिज्म''[3] में इसकी ओर संकेत किया है कि पाली साहित्य में नारी के प्रति अनुदार के भाव मिलते हैं। सर्वप्रथम नारी निन्दा से प्रभावित गौतम बुद्ध ने भी नारी के संघ प्रवेश पर आपत्ति प्रकट की थी, पर जब उन्होंने सोचा कि नारी का बहिष्कार उनके सिद्धान्तों के मूल पर ही आघात करेगा तो उन्होंने स्त्री –प्रवेश का अनुमोदन किया। बौद्ध कालीन साहित्य भारतीय सांस्कृतिक जीवन का चिरकाल से प्रेरणा स्रोत रहा है। उनकी गाथाओं एवं जातकों ने मानव की दैनिक चर्या में अत्यधिणक प्रभाव डाला है। वर्तमान भारत के निर्माण में भी बौद्ध साहित्य का एक प्रमुख स्थान है। आधुनिक भारत में कितने ही गण्यमान लेखकों ने बौद्ध–साहित्य की आधार शिला पर ही अपने साहित्य का प्रासाद खड़ा किया है।

बौद्ध साहित्य पालि भाषा के माध्यम से हमारे समक्ष आया। तथा अपवादरूप से बौद्ध कवि अश्वघोष की विचार श्रंखला संस्कृत के माध्यम से भी अभिव्यक्ति हुई। महापण्डित राहुल सांकृत्यायन के शब्दों में '' भारतीय बाड़गमय में बौद्ध साहित्य और उसमें पालि साहित्य का बहुत महत्व है। वस्तुतः ईस्वी सन् के पहले और पीछे की पॉच शताब्दियों के भारत के विचार, साहित्य अैर समाज सभी की जानकारी अधूरी रह जाती यदि हमारे पास पालि साहित्य का इतिहास न होता।[4]

बौद्ध साहित्य के द्वारा नारी की सामाजिक दशा का भी परिचय प्राप्त होता है । सभ्य परिवारों में कन्या की विवाह की उम्र 16 वर्ष थी वे पतियो से मिलने के लिए अत्कंठित रहतीं थीं।[5] कुण्डकेशा और विशाखा अविवाहित थीं जातक कथाओं के अनुसार वधू युवती होती थी। थेरी काथा में प्रेम विवाह का उल्लेख है।[6] इस प्रकार बौद्ध युग में पूर्ण युवा वर कन्या का विवाह होता था । बौद्ध काल में विवाह एक सामान्य उत्सव के रूप में होता था। विवाह के 16 वर्ष निर्धारित होने के बाद कन्या पति वरण माता पिता की इच्छानुसार ही सम्भव था। किन्तु यह नियम विधवाओं के लिए नहीं था। बहुविवाह की प्रथा भी उस समय थी। परि केवल पुरूषों के लिए बहुविवाह की प्रथा प्रचलित थी। विवाह विच्छेद भी बौद्ध नियम सम्मत था।[7] आर्थिक क्षेत्र में नारी पूर्ण स्वावलम्बिनी होती थी। वह उपने जीविका के लिए पुरूषों पर भार नहीं थी।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, July-Dec 2018

'कुशलाहं गहपति कप्पासं कंतितु वैणिमोलिखितुं सक्काहं गहपति तवच्चयेन दार के पोसितुम्।' बौद्ध साहित्य में एसी स्त्रियां जो पतियों को विश्वास दिलाती थीं कि वे ऊनी और सूती वस्त्रों का निर्माण कर अपने परिवार का पालन कर लेंगी।

बुद्ध के संघ में महिलाओं का प्रवेशः– बौद्ध साहित्य में नारी से सम्बन्धित सामग्री प्रमुख रूप से थेरी गाथा और सुत पिटक के अन्तर्गत निकायों तथा जातक कथाओं में उपलब्ध होती है। यह कल्पना मात्र ही है। वास्तविकता यह है कि भारत जैसे प्राचीनतावादी देश में स्त्री का स्वातत्रय अवांछनीय था। उनकी स्थिति में परिष्कार के चिन्ह मात्र प्राप्त होते है। यह परिष्कार महात्मा बुद्ध के सिद्धातों में घटित हुआ जो उनके उपदेशें में सन्नहित थे इन सिद्धान्तों में नारी की प्रगति का इतिहास है। बुद्ध ने इस बात पर बल दिया कि नारी भी पुरूष की भॉति अपने जन्म के कर्मों का फल ग्रहण करती है। इस सिद्धान्त से यह यह भावना कुछ ढीली पड़ गयी कि पुत्र स्वर्ग प्राप्ति में सहायक होता है। फलतः कन्या उपेक्षा के गर्त से उठकर पुत्रों के समान स्थान की अधिकारिणी बनी। ब्राहमण धर्म में सामान्य, बन्ध्या और विधवाओं का जीवन सुखमय नहीं था। इस प्रकार की हीन दशा में परिवर्तन आया और वे अपने ज्ञान के क्षेत्र में पुरूषों के समान ही अधिकार की भागिनी बनीं।

बौद्ध संघ का द्वार सभी प्राणियों के लिए खोल दिया। बौद्ध धर्म के अनुसार नारी निर्वाण की बाधक नही थी।[8] विवाहित तथा अविवाहित दोनों प्रकार की स्त्रियां भिक्षुणी हो सकती थी। विधवाओं, बन्ध्याओं एवं उपेक्षित नारियों के लिए भी बौद्ध संघ में कोई प्रतिबन्ध नहीं था। बिना भेदभाव के उनमें केवल आध्यात्मिक उत्कर्ष का ही सम्मान होता था। वैश्याएं भी भिक्षुणी हो सकती थी उनके प्रवेश पर बौद्ध संघ में कोई प्रतिबन्ध नहीं था।

उनके अतीत जीवन के प्रति घृणा एवं गर्हणा का प्रदर्शन वर्ज्य था। इसका पुष्ट प्रमाण कि आम्बपाली के निमंत्रण को भगवान बुद्ध सहर्ष स्वीकार किया और आम्रपाली ने अपना आम्रकुंज तथा स्वयं अपने को समर्पित कर दिया था। अर्थात वैश्याएं भी बौद्ध संघ में निर्वाण की अधिकारी थी।

बौद्ध धर्म में स्त्री शिक्षा :– बौद्ध साहित्य में यह प्रमाणित है कि बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों के आधार पर ही स्त्रियां शिक्षा ग्रहण करती थीं। पुरूष या स्त्री की शिक्षा में मतभेद नहीं था । तपस्विनी भिक्षुणियां गूढ़ दार्शनिक समस्याओं का समाधान करतीं थीं। इसके साथ ही योगसाधन कर स्त्री समाधि क्रिया में भी निष्णात होती थी।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, July-Dec 2018

बौद्ध साहित्य में स्त्री संस्कृति :–

'' कालका भमरवण्ण सदिसा, वेल्लितग्गा मम मद्धजा अहं।

ते जराय साणवाक सदिसा, सच्चादि वचनम् नजा था।।

काननम्हि ववखंड चारिवी, कोकिला चमधुरं निकूजितं।

तं जराय खचित तहि तहिं, सच्चवादि वचनम् नजा था।।

बौद्ध युग में कविता की भावधारा भी नारी हृदय का स्पर्श करती प्रवाहित होती हुई प्रतीत होती है। कतिपय नारियां अपने कवित्वमय व्यक्तित्व का भी परिचय देती हैं। थेरी गाथा मे आम्बपाली की हृदय ग्राही का सौष्ठव देखकर वस्तुतः आश्चर्य होता है। बौद्ध साहित्य में नारी की स्थिति में पर्याप्त परिष्कार हुआ बौद्ध धर्म के मूल सिद्धान्तों में करूणा, दया, क्षमा, समता और प्राणिमात्र के प्रति अहिंसा की भावना का नारी वर्ग पर अमिट प्रभाव पड़ा ये नारियां सदा के लिए भारत की पहचान बन गई। महाप्रजावती गौतमी, क्षेमा, सुजाता, आम्रपाली, कुण्डलकेशा आदि महिलाएं बौद्ध कालीन भारत के स्त्री रत्न हैं।

बौद्ध काल में नारी सौन्दर्य का सम्मान था। ''सुन्दरि'' पद को हम नारी जाति के सामान्य सम्बोधन रूप में भी ग्रहण कर सकते हैं। तात्कालिक चित्रकलाओं में नारी अनाघ्रात अवदात चित्रों की अवतारण होती है। अजंता बाघ और ऐलोरा के चित्रों से हम उस युग के नारी सौन्दर्य–चित्रण की कल्पना कर सकते है।। बौद्ध लोक सचमुच सौन्दर्य के अनन्य उपासक थे। बौद्ध कवि अश्वघोष के शब्दों में ''मुहर्महुर्मदिव्याजम्र स्तन नीलां शुकापारा। आलक्ष्य रसना रेजे स्फुरद्विघर विक्षपा।।[9]

बौद्ध काल में स्त्रियों का उत्तराधिकार :–

'पिता पब्बजतो तुम्हं भुंज भोगानि

सुन्दरि त्वं दायादिका कुले।[10]

बौद्ध काल में भ्रातृहीन कन्या अपने पिता की सम्पत्ति की अधिकारिणी होती है थेरी गाथा में एक स्थान पर प्रमाण उपलब्ध है कि एक माता अपनी कन्या को भिक्षुणी होने से मना करती है। क्योंकि उसके कोई भ्रातृ नहीं था तथा उसका पति भिक्षु हो गया था वह कन्या को विवाहिता जीवन व्यतीत करने और तपस्वी जीवन के प्रति उदासीन होने के लिए प्रेरणा देती है।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, July-Dec 2018

बौद्ध काल में नारी अवनति :– उत्तर वैदिक काल में नारी के सम्मान पर आघात हुआ पुरूषों की श्रेष्ठता नारियों सम्मान पर प्रश्न चिन्ह बन गया । नारी पुरूष पर पूर्णतया निभर्र हो गयी, किन्तु बौद्ध काल में नारी का पुनः उद्धार हुआ और सम्मान पाने की हकदार बनी यद्यपि पूर्व बौद्ध युग में नारी का स्थान उच्च था किन्तु बौद्ध काल तक उसकी स्थिति हेय समझी जाने लगी। नारी शरीर ही उसके पतन का मुख्य कारण बना। प्रथम दृष्टया गौतम बुद्ध ने नारी के संघ प्रवेश पर आपत्ति प्रकट की थी। परन्तु बाद में मन्थन करने पर कि नारी बहिष्कार सिद्धान्त उसके मूल पर आघात करेगा विचार मंथन के बाद उन्होंने स्त्री के संघ प्रवेश पर अनुमति प्रदान की। कालान्तर में उनके उच्च नैतिक आदर्श केवल आदर्श मात्र रह गये। बौद्ध विहारों की पवित्रता नष्ट हो गयी तथा भिक्षुओं की काम वासना ने भिक्षुणियों को फिर उपभोग के रूप में लाकर खड़ा कर दिया। इसी आधार पर जातक कथाओं में नारी की उसके भोग्य रूप के आधार पर कटु निन्दा के प्रमाण मिलते हैं।[11]

मूल्यांकन :– प्रस्तुत लेख में वैदिक काल में नारियों की सम्मान जनक स्थिति तथा उत्तर वैदिक काल में नारियों की हीनता तथा बौद्ध काल में नारी पुनः सम्मान जनक स्थिति को परिलक्षित करता है। इसे परिवर्तन का चक्रीय सिद्धान्त कहा जा सकता है। बौद्ध काल में नारी की स्थिति पुरूष के कन्धों पर न रहकर स्वाबलम्वन की आधार बनीं। बौद्ध की अमर वाणी ने वैषम्य को समाप्त कर उन्हें पुरूष के समान ला दिया। बौद्ध संघ में नारी को प्रवेश देना नारी को असहज परिवर्तन का उन्मुक्त वातावरण मिला । बौद्ध संस्कृति व नारी सौन्दर्य के अनन्य उपासक थे।

नारी को उत्तराधिकार प्रदान करने में बौद्ध दर्शन का विशेष योगदान रहा। जहां रामायण काल एवं महाभारत काल में प्राथमिकता प्रदान की गयी वहीं बौद्ध साहित्य में नारी को पुत्र के समकक्ष लाकर नारी को सम्मान प्रदान किया। विवाह की आयु 16 वर्ष प्राप्त योवनावस्थ में किन्तु माता पिता की स्वीकृति अनिवार्य तथा विवाह विच्छेद को बौद्ध साहित्य में उचित ठहराया गया। विधवाओं को लिए यह अनिवार्य शर्त नहीं थी।

संघ प्रवेश में विधवाओं तथा वैश्याओं को प्रवेश प्रदान कर बौद्ध साहित्य ने नारी को समुन्नत दर्जा प्रदान किया किन्तु बौद्ध विहारों की पवित्रता संघ में नारी के प्रवेश के बाद न रही और अंततः बौद्ध दर्शन के उच्च नैतिक चरित्र का स्थान क्षीण हो गया और पुनः नारी भोग्या के रूप में ही रह गयी। प्रस्तुत लेख में उपरोक्त कथानकों को यथास्थान सप्रमाण पुष्ट किया है।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, July-Dec 2018

संदर्भ ग्रन्थ :–

1. महाभारत 13/11/14
2. महाभारत 1/173/10
3. वेडेन–वीमेन इन बुद्धिज्म, पृष्ठ 42–50
4. भरतसिंह उपाध्याय की 'पालि साहित्य का इतिहास' पुस्तक की राहुल साकृत्यायन की भूमिका से उद्धत।
5. श्राजगृहे तु एका सेठिधीता सोलसवस्सुद्देशिका अभिरूपा अहोसि दस्सनाय।
   तस्मिं च वये थिता नारियो परूसझासाय होति पुरिसलोला। धम्मपद का भाष्य, 102
6. थेरीगाथा सं0 47
7. शकुन्तला राव शास्त्री : (वीमेन इन दि सेक्रेड लॉज, पृ0 8–9)
8. इत्थिभावो नो किं कविरा चित्तम्हि सुस्साहिते।
   जानम्हि वत्तमानम्हि सम्मा धम्मं विपस्सतों।।– थेरी गाथा, 61
9. थेरी गाथा संख्या– 327
10. बुद्ध चरित 4/133
11. जातक– वाल0 1 पृष्ठ 102, 106,145
    जातक– वाल0 2 पृ0 191 , 193